NATIONAL RURAL HEALTH MISSION
राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन
(2005-2012)

मितानिन के

नवजात देखभाल

के पुस्तक

छत्तीसगढ़ शासन
सत्यमेव जयते

संचालनालय, स्वास्थ्य सेवाएँ, छत्तीसगढ़ शासन

मितानिन मेरे गांव की

गांव की तस्वीर बदल रही है मितानिन मेरे गांव की
मां बच्चो में मुस्कान बिखेर रही मितानिन मेरे गांव की

हो स्वस्थ्य हर जच्चा बच्चा परिभाषा मेरे गांव की
गांव की तस्वीर बदल रही है मितानिन मेरे गांव की

हर घर में विश्वास जीत रही मितानिन मेरे गांव की
गांव की तस्वीर बदल रही है मितानिन मेरे गांव की

बाल स्वास्थ्य कौशल सिखाती मितानिन मेरे गांव की
गांव की तस्वीर बदल रही है मितानिन मेरे गांव की

ललना के जतन से जान बचाती मितानिन मेरे गांव की
गांव की तस्वीर बदल रही है मितानिन मेरे गांव की

मितानिन का नाम.....

पारा.....

पंचायत.....

विकासखंड.....

जिला.....

नवजात देखभाल

संचालनालय, स्वास्थ्य सेवाएँ
छत्तीसगढ़ शासन

विषय -सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ क्र.
अध्याय–1	" नवजात देखभाल " छत्तीसगढ़ – एक परिचय	1
अध्याय–2	पूर्व में सीखे नवजात देखभाल के संदेशों व कौशलों को दोहराना	3
अध्याय–3	गर्भवती महिलाओं की सूची बनाना व प्रसव हेतु सलाह देना	14
अध्याय–4	प्रसव की प्रक्रिया को समझना	19
अध्याय–5	अधिक खतरे वाले नवजात की पहचान और देखभाल	21
अध्याय–6	नवजात षिषु का सांसा रूकना इसका पता करना एवं उसका प्रारंभिक ईलाज करना	26
अध्याय–7	नवजात के ठण्डे होने की समस्या की पहचान, बचाव व ईलाज	28
अध्याय–8	स्तनपान के विषय में कुछ नई जानकारी सीखना व पहली सीखी जानकारी को दोहराना	31
अध्याय–9	नवजात में गंभीर संक्रमण की पहचान, प्रांरभिक ईलाज व रेफरल	35
अध्याय–10	नवजात देखभाल में मितानिन की भूमिका	39

अध्याय–1

''नवजात देखभाल'' छत्तीसगढ़ - एक परिचय

छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में मितानिन व स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के अच्छे प्रयास से शिशु मृत्यु दर में कमी आई है। किन्तु गत तीन वर्षो से यह शिशु मृत्युदर लगभग 57 प्रति हजार पर रूकी हुई है। इसका अर्थ है कि आज भी छत्तीसगढ़ में हर साल लगभग 37000 शिशु एक वर्ष पूरा करने से पहले ही मर जाते हैं। इन शिशुओं में से अधिकतर अपने जीवन के पहले माह में ही मर जाते है। इस तरह आज भी छत्तीसगढ़ में लगभग 25000 नवजात एक माह पूरा करने से पहले ही मर जाते हैं।

इसका अर्थ है कि औसतन हर पंचायत में हर साल लगभग 3 नवजात मर जाते हैं। हमें इन नवजात बच्चों की मौत को रोकना होगा।

नवजात बच्चों की देखभाल पर मितानिनों ने दसवां चरण प्रशिक्षण लिया है। इस प्रशिक्षण पश्चात् बहुत से नवजात बच्चों के परिवार में मितानिन की सलाह का लाभ मिल रहा है। इन प्रयासों को और मजबूत बनाने के लिए यह प्रषिक्षण किया जा रहा है।

1. इस प्रशिक्षण अंतर्गत निम्नलिखित कार्यो को सुनिश्चित करना है :

- मितानिन सभी प्रसवों के दौरान अवष्य उपस्थित हो।
- मितानिन सभी नवजात के घर जन्म के 28 दिन के अंदर कम से कम 6 बार (1,3,7,10,15,28) भेंट करें।
- नवजात के घर भेंट करके मितानिन गंभीर संक्रमण के चिन्हों को पहचाने व अस्पताल अथवा ए.एन.एम. के पास ले जायें। जहाँ उसे 5 से 7 दिन का जेन्टामाईसिन सुई एवं कोट्रीम दवा से पूरा ईलाज मिल सके ।
- जो नवजात ए.एन.एम. तक भी नहीं पहुंच पाते, उन्हें कोट्रीम की पूरी खुराक मितानिन द्वारा मिले।

2. विभिन्न लोगों की भूमिका :

इस कार्यक्रम में मितानिन की प्रमुख भूमिका होगी। साथ में ए.एन.एम., प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण रहेगी। इस कार्य को सफल बनाने के लिए मितानिन व दाई के बीच तालमेल अच्छा होना चाहिए।

क. मितानिन की भूमिका :

- मितानिन घर में होने वाले सभी प्रसव पर उपस्थित रहें।
- प्रसव पश्चात नवजात के घर प्रथम 4 सप्ताह (28 दिन) में कम से कम 6 बार गृह भेंट की जाएँ। अगर प्रसव संस्थागत है तो नवजात के घर वापस आने पर वह गृह भेंट हेतु जावे।
- लगातार गृह भेंट के द्वारा यह सुनिश्चित करना कि परिवार को नवजात की नाजुक स्थिति में सलाह मिलता रहे। जैसे कि स्तनपान करना, नवजात को गर्म रखना, हाथ धोकर पकड़ना आदि और यह भी सुनिश्चित करना कि परिवार दिए गए सलाह का पालन करें।
- नवजात में गंभीर संक्रमण की पहचान करना और प्रकरणों को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र अथवा ए.एन.एम. के पास रेफर करना। और जो नवजात वहाँ न पहुँच पाए उन्हें कोट्रीम की पूरी खुराक द्वारा ईलाज करना ।

ख. मितानिन प्रशिक्षक की भूमिका :

- मितानिन को उसके क्षेत्र आधारित कार्य में सहयोग प्रदान करना।

ग. ए.एन.एम. व स्वास्थ्य केन्द्रों की भूमिका :

- उनके पास पहुँचने वाले नवजात का पूरा ईलाज करना।

अध्याय–2

पूर्व में सीखे नवजात देखभाल के संदेशो व कौशलों को दोहराना

पूर्व में सीखे नवजात देखभाल के सात संदेशों को दोहराना :

1. बच्चे को गर्म रखें

2. बच्चे को जन्म के आधे घंटे के अंदर स्तनपान कराएं।

3. बच्चे की नाल को साफ एवं सूखा रखें।

4. बच्चे का वजन लें। 2 किलो से कम वजन के बच्चे पर मितानिन की सलाह अनुसार विषेष ध्यान दें।

5. बच्चे को कोई परेशानी होने पर मितानिन से संपर्क करें।

6. बच्चे को बी.सी.जी. का टीका लगवायें तथा पोलियो की खुराक पिलाएँ

7. माँ को खाना खिलाएँ

चेहरे पर साबून न लगाएँ।

बच्चे की आँख में कुछ न डालें।

पूर्व में सीखे कौशलों को दोहराना :

(1) हाथ धोने की विधि :

बच्चों में संक्रमण का प्रमुख माध्यम उनको संपर्क करने वाले हाथ होते हैं। जिससे कि नवजात को पकड़ा जाता है। अतः नवजात को छूने के पूर्व हाथ को अच्छे से धोकर आसानी से नवजात को हम संक्रमण से बचा सकेंगे। इसके लिए हमें अपने हाथों को साबुन से बहुत अच्छे से धोना आना चाहिए।

आइये सीखें कि 6 चरणों में हाथों को अच्छे से कैसे साफ करें :

तैयारी : अपने हाथों की चूड़ी, घड़ी उतार दें व बांहो के कपड़े को ऊपर कर लें। साबुन व पानी लेकर हाथ में झाग बनायें।

चरण 1 : दोनों हाथों की उंगलियों में बीच की सफाई हथेली की तरफ से करें।

चरण 2 : दोनों हाथों की उंगलियों में बीच की सफाई हथेली के पीछे की तरफ से करें।

चरण 3 : एक हाथ के नाखूनों को दूसरे हाथों की रेखाओं पर स्पर्श करते हुए दोनों हाथ की रेखाओं व नाखूनों को साफ करें।

चरण 4 : दोनों हाथों के अंगूठों की सफाई मुट्ठी से करें।

चरण 5 : दोनों हाथों के पैरों (नकलों) की सफाई करें।

चरण 6 : दोनों हाथों की कलाई को साफ करना।

इन 6 चरणों के पूर्ण होने के बाद कोहनी तक पानी से धोकर हवा में सुखायें।

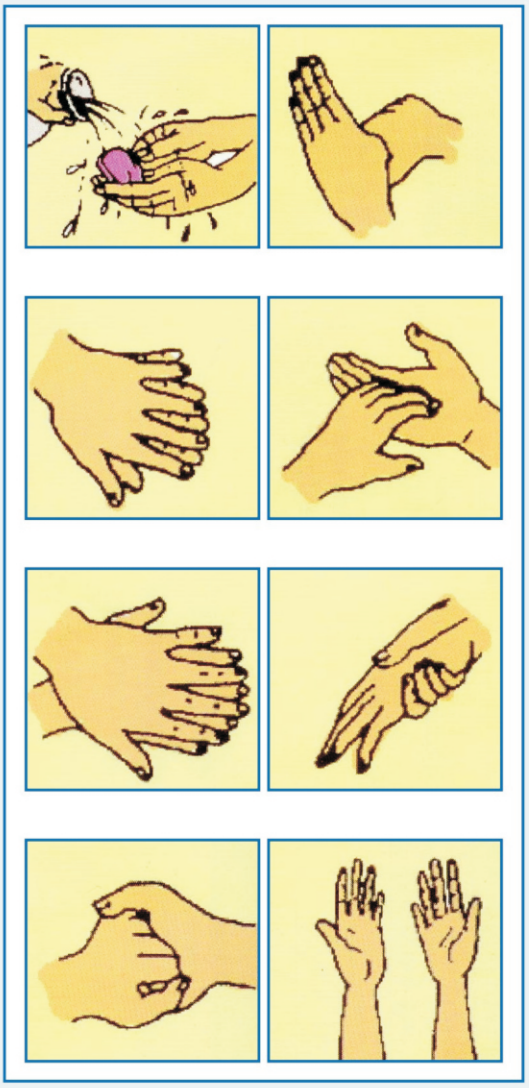

(2) बच्चे को लपेटना (उष्ण श्रृंखला) :

नवजात बच्चे के शरीर का ठंडा होना गंभीर लक्षण है जिसे समय रहते सामान्य नहीं बनाया गया तो शिशु के मृत्यु का कारण भी बन सकता है। अतः हमें बच्चे के षरीर का तापमान सामान्य बनाये रखना जानना चाहिए। तो आईये सीखें कि किस प्रकार बच्चे को लपेटकर गर्म रखा जा सकता है।

चरण 1 : पहले अपने दोनों हाथों को 6 चरणों में धो लें।

चरण 2 : एक साफ व सूती कपड़ा लें जिसमें बच्चे को लपेटा जा सके।

चरण 3 : कपड़े को साफ जगह या बिस्तर पर बिछा लें और कपड़े का एक कोना मोड़ दें।

चरण 4 : मुड़े कोने के बीच के हिस्से पर बच्चे का सिर रखते हुए उसे लेटा दें, और बचे हुए मुड़े हिस्से से बच्चे के सिर को ढक दें।

चरण 5 : अब बच्चे के एक तरफ के कपड़े के हिस्से से कान को ढकते हुए उसको दूसरी तरफ ला कर पीठ के नीचे दबा दें।

चरण 6 : अब बच्चे के पैर तरफ के कपड़े के हिस्से को कंधे के नीचे दवा दें।

चरण 7 : अब दायी तरफ के हिस्से को बांयी तरफ लाकर पीठ के नीचे दबा दें।

चरण 8 : पूरी तरह लपेटने के बाद देखें कि कहीं से हवा न जा रही हों। यदि हवा जा रही हो तो दोबारा लपेटें।

(3) कंगारू विधि से नवजात को गर्म रखना :

नवजात बच्चे को त्वचा से त्वचा लगाकर गर्म रखा जा सकता है। विशेषकर जब बच्चे का शरीर ठंडा पड़ रहा हो, तब इस विधि का उपयोग करें जिसे हम कंगारू विधि कहते हैं। आइये सीखें –

आइये जानें कि कंगारू विधि से नवजात को गर्म कैसे रखें :

चरण 1 : पहले अपने दोनों हाथों को 6 चरणों में धो लें।

चरण 2 : एक साफ व सूती कपड़ा लें और मां को आराम से बैठने या लेटने को कहें।

चरण 3 : बच्चे के शरीर से सारे कपड़े उतार दें, केवल टोपी, मोजा व लंगोट पहने रहने दें माँ के ब्लाउज के बटन खोल दें और बच्चे को मुंह के बल मां के छाती पर दोनों स्तनों के बीच लेटा दें। ध्यान रखें कि माँ और बच्चे दोनों की त्वचा लगी हो।

चरण 4 : बच्चे के सिर को एक तरफ तिरछा कर दें ताकि बच्चें को सांस लेने में कोई कठिनाई ना हो।

चरण 5 : अब बच्चे को मां के ब्लाउज या गाउन के अंदर कर दें या फिर किसी अन्य साफ कपड़े से लपेट दें।

चरण 6 : इसके बाद मां व बच्चे को एक और कंबल या शॉल से ढंक दें।

यदि शिशु को स्तनपान कराना हो तो ऊपर की गाठ ढीली करके करवाएं।

(4) घड़ी देखना :

बच्चों में गंभीर संक्रमण के लक्षण में से एक लक्षण है तेज सांस चलना। मितानिन के लिए तेज सांस की पहचान करने में घड़ी का सही उपयोग अत्यंत आवश्यक है, आइये सीखें –

चरण 1 : घड़ी को इस तरह से सामने रखें कि घड़ी का सेकण्ड कांटा व बच्चे की छाती दोनो को आसानी से देख सकें।

चरण 2 : अब सेकण्ड को 12 पर आने दें। 12 पर आते ही सांस की गिनती प्रारंभ करें।

चरण 3 : सेकण्ड का काटा पुनः 12 पर आते तक सांस की गिनती करें। सेकण्ड का काटा 12 पर आते ही गिनती बंद कर दें।

चरण 4 : सेकण्ड कांटे के एक चक्कर में गिनी कुल गिनती एक मिनट मे बच्चे द्वारा ली गई कुल सांस होगी।

(5) सांस गिनना

(अ) घड़ी देखते हुए सांस गिनना सीखेंगे :

चरण 1 : पहले अपने दोनों हाथों को 6 चरणों में धो लें और बच्चे को मां की गोद पर या बिस्तर पर आराम से लेटा लें (ध्यान रखें कि उस समय बच्चा रो ना रहा हो, हिल डुल ना रहा हो, स्तनपान ना कर रहा हो।)

चरण 2 : अब बच्चे की छाती या पेट के किसी एक हिस्से का चयन करें।

चरण 3 : अब घड़ी को सामने रखें ताकि घड़ी के सेकण्ड कांटे और बच्चे की सांस दोनो को आसानी से देख सकें। अब सांस की गिनती प्रारंभ करें और एक मिनट तक गिने।

चरण 4 : सांस की गिनती कम से कम दो बार अवश्य करें 1 मिनट में गिनी सांस की संख्या व उम्र के आधार पर निर्णय करें कि सांस तेज है या नहीं। नवजात के लिए यदि सांस 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक हैं तो यह खतरे का लक्षण है।

(6) स्तनपान का सही ढंग बताना

स्तनपान शिशु के लिए सर्वोत्तम आहार है और पूर्ण रूप से यह बच्चे को मिलना चाहिए। अगर यह पूर्ण रूप से न मिले तो बच्चा कमजोर होने लगता है, और बार–बार बीमार पड़ता है। शिशु को स्तनपान सही ढंग से न करा पाने के कारण स्तनों से बच्चे का लगाव, बच्चे का माता के द्वारा सही ढंग से न पकड़ना व शिशु का प्रभावी ढंग से न चूस पाना हो सकता है। स्तनपान कराते समय माता को ये छोटी – छोटी बातों को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है। तो आइये हम सीखेंगे स्तनपान कराने का सही ढंग।

चरण 1 : बच्चे को मां के हाथों में सीधा इस तरह पकड़ें कि बच्चे का मुंह स्तन की तरफ हो और शरीर माता के षरीर से लगा हो और बच्चे के शरीर का भार माता के हाथों में हो और बच्चे की गर्दन सीधी हो।

चरण 2 : अब बच्चे के मुंह को चूचक से छूवायें और बच्चे के मुंह खुलने का इंतजार करें। मुंह खुलते ही स्तनों से लगायें।

चरण 3 : स्तनपान करते समय लगाव देखने के लिए देखें कि बच्चे की ठोड़ी स्तनों को छू रही हो, मुंह पूरा खुला हुआ हो, निचला होठ बाहर की ओर मुड़ा हुआ हो। तथा नीचे की अपेक्षा एरियोला ऊपर अधिक दिख रहा हो।

चरण 4 : बच्चा प्रभावी रूप से चूस रहा है यह देखने के लिए देखें कि बच्चा धीमा गहरा चूस रहा हो।

(7) तापमान लेना :

बच्चे के शरीर का तापमान कम होना तथा सामान्य से अधिक होना गंभीर लक्षण है। इसलिए आवश्यक है, तापमान लेना जानना। तो आइए सीखते हैं, तापमान लेने की विधि –

हाथ से छूकर :

चरण 1 : पहले अपने दोनों हाथों को 6 चरणों में धो लें।

चरण 2 : बच्चे को आराम से मां की गोद पर या बिस्तर पर लेटा या बैठा दें।

चरण 3 : बच्चे के शरीर से कपड़ा हटा कर अपनी हथेली के उल्टे हिस्से से उसकी बगल पर या उसके पेट पर लगाकर महसूस करें।

चरण 4 : अगर गर्म महसूस हो तो बच्चे का शरीर सामान्य रूप से गर्म है। या अगर ठंडा महसूस हो तो बच्चे का शरीर ठंडा हो रहा है।

डिजीटल थर्मामीटर से

यह थर्मामीटर बैटरी से चलता है।

चरण 1 : पहले अपने दोनों हाथों को 6 चरणों में धो लें। थर्मामीटर के नुकीले सिरे को रूई से पोंछ लें।

चरण 2 : बच्चे को आराम से मां की गोद पर या बिस्तर पर लेटा या बैठा दें।

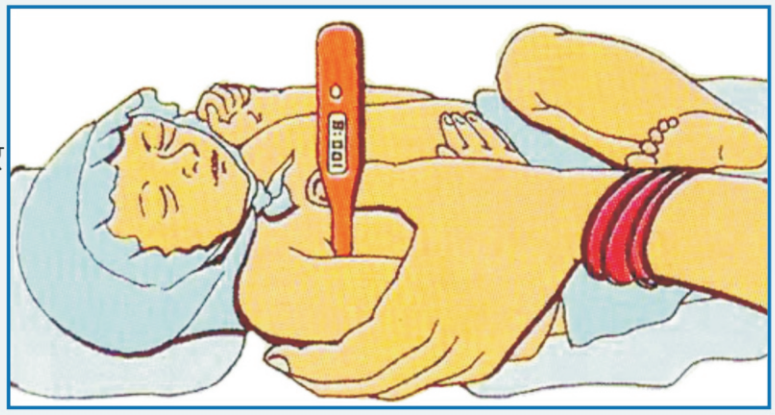

चरण 3 : थर्मामीटर को चौड़े सिरे से पकड़ लें। (ध्यान रखें कि चमकीले वाले हिस्से को हाथ न लगायें) व थर्मामीटर का बटन दबाकर उसे चालू कर ले। चालू होने पर थर्मामीटर एक बार बीप की आवाज करेगा। पहले उसमें 188.8F दिखाई देगा। फिर उसमें पिछली बार के तापमान का एक झलक दिखाई देगा। फिर F का निशान टिमटिमाने लगेगा।

चरण 4 : इस समय बच्चे के कपड़े को हटाकर थर्मामीटर बगल में सही ढंग से रखें और थर्मामीटर को बच्चे की बांह से लगाकर रखें। थर्मामीटर के अंक धीरे–धीरे बदलने लगेगें व F का निशान टिमटिमाता रहेगा। जब थर्मामीटर धीरे–धीरे से बीप–बीप की आवाज करे अथवा F का निशान टिमटिमाना बंद कर दें तो थर्मामीटर निकालकर उसमें तापमान का अंक देखें और इसे लिख लें।

चरण 5 : यदि तापमान 99 से अधिक है तो यह खतरे का एक लक्षण है। यदि तापमान 97 से 99 के बीच है तो यह ठीक है। यदि तापमान 95 से 97 के बीच है तो इसका अर्थ है कि बच्चा ठण्डा होना शुरू हो गया है। और यदि तापमान 95 डिग्री से कम है तो यह बच्चा ठण्डा हो जाने का लक्षण है।

चरण 6 : थर्मामीटर के नुकीले सिरे को स्पीरिट व रूई से साफ कर वापिस डिबिया में रखें।

परम्परागत थर्मामीटर से बुखार देखना

इस थर्मामीटर में बैटरी नहीं रहती।

चरण 1 : पहले अपने दोनों हाथों को 6 चरणों में धो लें।

चरण 2 : बच्चे को आराम से मां की गोद पर या बिस्तर पर लेटा या बैठा दें।

चरण 3 : थर्मामीटर को किनारे से पकड़ लें (ध्यान रखें कि पारे वाले हिस्से को हाथ न लगायें) और थर्मामीटर को झटककर पारे को 35 डिग्री सेल्सियस से नीचे लायें।

चरण 4 : बच्चे के कपड़े को हटाकर थर्मामीटर को बांह एवं छाती के बीच बगल में सही ढंग से रखें और थर्मामीटर को बच्चे की बांह से लगाकर रखें। थर्मामीटर को 2 मिनट तक रखें।

चरण 5 : समय पूर्ण होने पर थर्मामीटर निकालकर पारा देखें –

1. यदि पारा लाल निशान से ऊपर है तो बच्चे को बुखार है।
2. और यदि लाल निशान से नीचे है तो बच्चे को बुखार नहीं है।

(8) कटोरी में दूध निकालना

मां अगर काम पर जाये या बच्चा कमजोर होने के कारण स्तनपान न कर पाए तो परिवार बोतल का उपयोग करने लगते है। जो कि गलत हैं। बोतल से बच्चे को संक्रमण हो सकता है और वह बीमार पड़ सकता है। तो आइए इस समस्या को दूर करने हेतु सीखेंगे कटोरी में दूध निकालना–

चरण 1 : एक कटोरी व चम्मच को गर्म पानी से धो लें।

चरण 2 : मां से कहें कि वह आराम से बैठकर एक हाथ में कटोरी लेकर अपने स्तन के पास पकड़ ले।

चरण 3 : अब अपने दूसरे हाथ का अंगूठा चूचक और एरियोला के ऊपर तथा पहली उंगली उसके नीचे रखें।

चरण 4 : अब मां से कहें कि वह अपना अंगूठा व उंगली धीरे से भीतर की तरफ दबाये और एरियोला को अंगूठे तथा उंगली के बीच ले। इस तरह वह बार–बार दबाये और छोड़े। बार–बार ऐसा करने से स्तन से दुध टपकने लगेगा।

चरण 5 : मां को एरियोला के चारो तरफ से बार बार दबाने को कहें ताकि हर तरफ से दूध निकाल सके। दूध को इसी तरह तब तक निकालते रहें, जब तक उसके निकलने की रफ्तार धीमी न पड़ जाये।

चरण 6 : मां को दोनों स्तनों से दूध निकालना चाहिए, और दोनों स्तनों का पूरी तरह दूध निकालने में करीब 30 मिनट लग सकते हैं। चम्मच में दूध लेकर शिशु के होंठ के किनारे में छुआएं। शिशु के मुंह खोलते ही मुंह के किनारे से दुध पिलाएं।

(9) गोली खिलाने का तरीका

बीमारी के दौरान सबसे महत्वपूर्ण होता है, बच्चे को दवा देना अगर इस पर ध्यान नहीं दिया जाये तो बच्चे की बीमारी के बढ़ने का खतरा हो सकता है, तो आइए जाने कि गोली किस प्रकार खिलायेंगे –

चरण 1 : पहले अपने दोनों हाथों को 6 चरणों में धो लें।

चरण 2 : उम्र के अनुसार गोली तोड़ लें या पूरी गोली लें

चरण 3 : गोली पीसना – गोली पीसने के लिए दो चम्मच लें एक चम्मच पर गोली रखें व दूसरे चम्मच से उसे दबायें और उसे बारीक पीस लें। मितानिन के पास अधिकांशतः बड़ी गोली उपलब्ध रहती है। इसको पीस लें। पीसी हुई गोली के दो भाग करें। फिर इनमें से एक भाग को आधा बांट लें। इस तरह एक चौथाई गोली तैयार हो जाएगी।

चरण 4 : गोली खिलाने के लिए चम्मच में पीसा हुआ भाग पानी या मां के दूध से मिलाकर बच्चे को पिलायें।

चरण 5 : पिलाने का तरीका बच्चे को सही स्थिति में मां की गोद पर बैठायें या लेटाये और दवाई वाले चम्मच को बच्चे के होठ के किनारे के हिस्से पर छूवायें और बच्चे का मुंह खुलने का इंतजार करें। मुंह खुलते ही दवाई किनारे से मुंह में डाल दें।

(10) जेंशन वाइलेट (जी.वी. पेंट) लगाना

फोड़े – फूंसी पर समय से जी.वी. पेंट लगाकर संक्रमण को रोका जा सकता है।

चरण 1 : पहले अपने दोनों हाथों को 6 चरणों

चरण 2 : में धो लें।

एक साफ कटोरी में एक ढक्कन

चरण 3 : जी.वी. पेन्ट वएक ढक्कन पानी मिला लें।

साफ रूई लें और उसे कटोरी में बनाई दवाई में भिगो कर अथवा फोड़े पर लगाएं। ध्यान रखें कि रूई से एक बार लगाने के बाद यदि दूसरी बार जरूरत पड़े तो नई रूई से ही लगाएं। यदि रूई उपलब्ध न हो तो साफ सूती कपड़े के टुकड़े का उपयोग करें।

चरण 4 : फोड़े/फुंसियों वाली जगह पर रूई से जेंशन वाइलेट लगायें।

चरण 5 : 5 दिन तक प्रतिदिन दो बार लगाएं।

(11) नवजात का वजन लेना :

छः चरणों में हाथ धोने के पश्चात् :

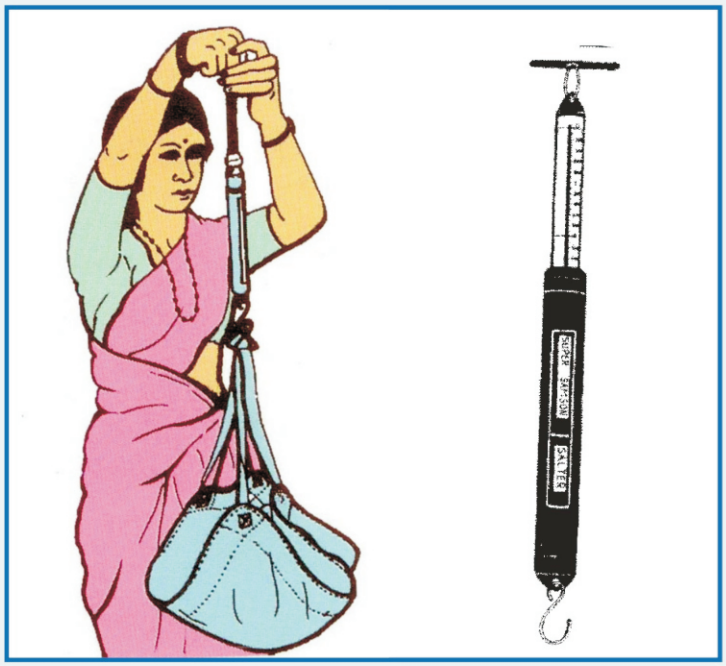

चरण 1 : वजन मशीन को ऊपर की हुक से आँख के सामने पकड़ें व उसमें खाली झोला डालकर देखें कि क्या 0 का निशान सही जगह पर है। यदि न होतो ऊपर के गोले को घुमा कर उसे ठीक 0 पर ले आए।

चरण 2 : जमीन पर साफ कपड़ा बिछा लें। उस पर झोले को हुक से उतार कर रखें।

चरण 3 : कपड़े उतारकर नवजात को झोले में इस तरह रखें कि उसके गिरने की संभावना न हो।

चरण 4 : झोले को वजन मशीन के नीचे के हुक पर टांग ले व वजन मशीन को ऊपर की हुक से पकड़ कर धीरे–धीरे ऊपर उठाएं जब तक मशीन आंख के सामने पहुंच जाए।

चरण 5 : वजन को पढ़ें।

चरण 6 : धीरे से मशीन को नीचे लाएं और शिशु को नीचे बिछाए कपड़े पर रखें। झोले को हुक से अलग करें। बच्चे को सावधानी से निकाल कर मां को दें

चरण 7 : वजन को लिख लें।

अध्याय–3

गर्भवती महिलाओं की सूची बनाना व प्रसव हेतु सलाह देना

गर्भवती महिलाओं की सूची बनाना :

मितानिन को अपने पारे में जितनी गर्भवती महिलाएं हैं, उनकी सूची बनानी चाहिए। पारा बैठक, परिवार भ्रमण, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता व ए.एन.एम. से जानकारी के माध्यम से मितानिन पता कर सकती है कि कौन सी महिलाएं गर्भवती हैं। हर माह इस सूची में नए गर्भवतियों का पता लगाकर उनका नाम जोड़ लेना चाहिए।

इन सभी गर्भवती महिलाओं के प्रसव की संभावित तिथि मितानिन ए.एन.एम. से पूछकर भर सकती है। प्रसव हो जाने के बाद कुछ जानकारियाँ जैसे कि प्रसव का दिनांक, प्रसव का परिणाम, शिशु का वजन आदि को मितानिन खुद प्रसव के दिन पता कर भर सकती है। इस जानकारी को निम्नलिखित प्रपत्र में भर कर रखना चाहिए ।

पारा का नाम .....गांव.....

क्र.	गर्भवती का नाम	पति/पिता का नाम	प्रसव की संभावित–तिथि	प्रसव कब हुआ– तिथि	प्रसव का परिणाम (जीवित पैदा हुआ अथवा मृत पैदा हुआ)	नवजात का वजन	यदि नवजात की मृत्यु हुई तो मृत्यु का दिनांक व कारण

पारा का नाम .....गांव.....

क्र.	गर्भवती का नाम	पति/पिता का नाम	प्रसव की संभावित–तिथि	प्रसव कब हुआ– तिथि	प्रसव का परिणाम (जीवित पैदा हुआ अथवा मृत पैदा हुआ)	नवजात का वजन	यदि नवजात की मृत्यु हुई तो मृत्यु का दिनांक व कारण

गर्भवती महिलाओं को प्रसव हेतु सलाह देना :

मितानिन को इन सभी गर्भवती महिलाओं की प्रसव पूर्व जांच व अन्य सलाह अर्थात खान–पान, आराम, आंगनबाड़ी जाना आदि हेतु उनसे भेंट करते रहना चाहिए। 8वें या 9वें माह में एक गृह भेंट कर गर्भवती महिला व उसके परिवार को प्रसव हेतु तैयारी करने में मदद करना चाहिए। मितानिन का प्रयास रहना चाहिए कि अधिकांश गर्भवती व उनके परिवार संस्थागत प्रसव हेतु तैयारी करें।

प्रसव हेतु तैयारी करने के मुख्य भाग है :

- प्रसव किस संस्था में करवाना है, तय करना।
- संस्था तक कैसे पहुंचेंगे, इस हेतु वाहन का पता लगाकर रखना।
- प्रसव के समय कौन साथ में जाएंगे, तय करना।
- प्रसव के लिए लगभग कितनी राशि साथ लेकर चलना पड़ेगा, हिसाब लगाना व राशि हेतु व्यवस्था करना। अत्यंत गरीब परिवार ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति व अन्य अनटाईड फंड राशि से भी मदद प्राप्त कर सकते हैं।
- प्रसव हेतु आवश्यक साफ कपड़े, नया ब्लेड और धागा आदि सामाग्री की व्यवस्था करना।
- साथ में यह भी बता देना चाहिए कि जब प्रसव का समय आएगा, तो वे मितानिन को जरूर बुलाएं। अगर किसी कारण से प्रसव घर में ही कराना पड़े तब भी दाई के साथ–साथ मितानिन को भी खबर करें। मितानिन संभावित तिथि के आधार पर भी गर्भवती महिला से संपर्क कर सकती है। मितानिन दाई को भी बोल कर रखे कि जब परिवार वाले दाई को खबर करते हैं, तो मितानिन को भी आने के लिए खबरकर दे।
- यदि मितानिन को यह समझ आ गया है कि परिवार संस्थागत प्रसव हेतु नहीं जायेंगे तो घर प्रसव के लिए भी तैयारी करनी होगी। घर प्रसव के लिए तैयारी के मुख्य भाग हैं
- मितानिन परिवार से चर्चा करके सुनिश्चित कर ले कि प्रसव का कमरा साफ हो और उसमें पर्याप्त रौशनी हो कमरा गर्म रखने की व्यवस्था हो कमरा हवादार हो किन्तु उसमें हवा के झोके न आ रहे हो। हवा के झोके यदि आयेंगे तो नवजात को ठण्ड लगने का खतरा हो सकता है।

- मितानिन परिवार से बात करके सुनिश्चित कर ले कि प्रसव हेतु साफ कपड़े, नया ब्लेड और धागा, गर्म पानी, आदि समय पर उपलब्ध हो।
- नवजात के लिए कम से कम तीन साफ कपड़े होने चाहिए। इसके लिए तीन सूती कपड़े साबुन से धोकर व धूप में सुखा कर तैयार रखे।

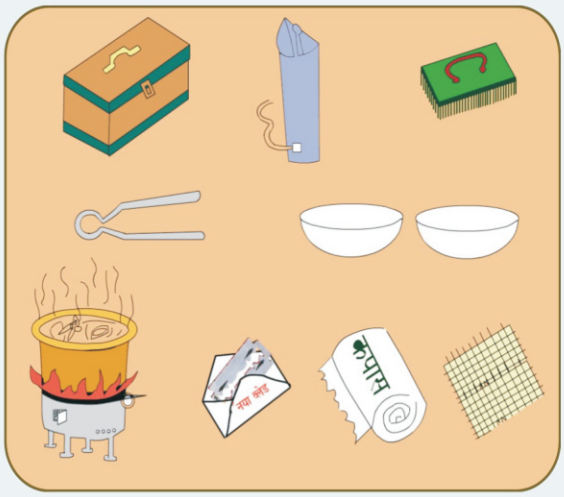

- परिवार यह भी तैयारी रखे कि यदि किसी स्थिति में गर्भवती को अस्पताल में ले जाना पड़े तो इसके लिए सभी तैयारी जैसे कि अस्पताल का चयन, वाहन का पता, आवश्यक पैसा, साथ जाने वाले लोग व जरूरी समान जैसे कि साफ कपड़े आदि पहले से रहे।

मितानिन को सभी प्रसवों के दौरान मौजूद रहना चाहिए। प्रसव यदि संस्था में होगा तो भी मितानिन के रहने से परिवार व स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को मदद मिलेगी। और अगर प्रसव घर में होगा तो मितानिन समय पर जरूरी मदद दे सकेगी। मितानिन द्वारा प्रसव के दौरान मौजूद रहने से और भी लाभ होगा। वह जन्म पश्चात् परिवार को तुरन्त सलाह दे पाएगी व उस सलाह का परिवार द्वारा पालन करवा पाएगी।

कैसे तय करेंगे कि बच्चा मृत पैदा हुआ था अथवा जीवित पैदा हुआ था ? :

यह जानने के लिए तीन लक्षणों को देखेंगे:

(क) बच्चा रोता है या नहीं।

(ख) बच्चा सांस लेता है या नहीं।

(ग) बच्चा हिल डुल रहा है या नहीं।

यदि जन्म के बाद किसी भी समय नवजात न रोया हो, न सांस लिया हो और न ही हिला डुला हो तो इसका अर्थ है कि बच्चा मृत पैदा हुआ था। यदि किसी भी समय बच्चे में रोने, सांस लेने अथवा हिलने के लक्षण दिखाई दे तो इसका अर्थ है कि बच्चा जीवित पैदा हुआ है।

अध्याय–4

प्रसव की प्रक्रिया को समझना

नवजात शिशु के जन्म के समय क्या होता है :

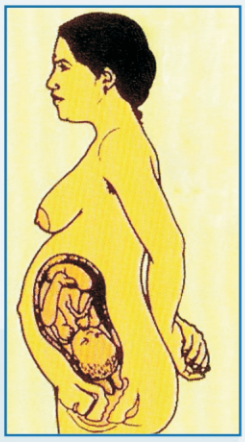

चित्र–1

1. चित्र 1 मे एक गर्भवती को बगल से खड़े हुए दिखाया गया है जो प्रसव के लिये तैयार है। मितानिन को चित्र के माध्यम से पहचानना है कि, गर्भाशय कहां पर है, बच्चे की स्थिति कैसी है?

साधारण प्रसव में पहले बच्चे का सिर निकलता है। यदि ऐसा नहीं होता है, तो यह खतरे का कारण हो सकता है।

प्रसव के तीन भाग होते हैं :

प्रसव का प्रथम भाग :

दर्द शुरू होने से लेकर गर्भ का मुंह खुलने तक के समय को प्रसव का प्रथम भाग कहते हैं। प्रसव के प्रथम भाग में 8 से 12 घंटे लगते हैं। इसके अंत में पानी की झिल्ली फूटती है। निकलने वाला पानी अधिकांशतः साफ पानी जैसा दिखाई देता है पर कई बार हरा भी हो सकता है। हरा पानी का अर्थ है कि, नवजात को सांस रूकने की समस्या आ सकती हैं।

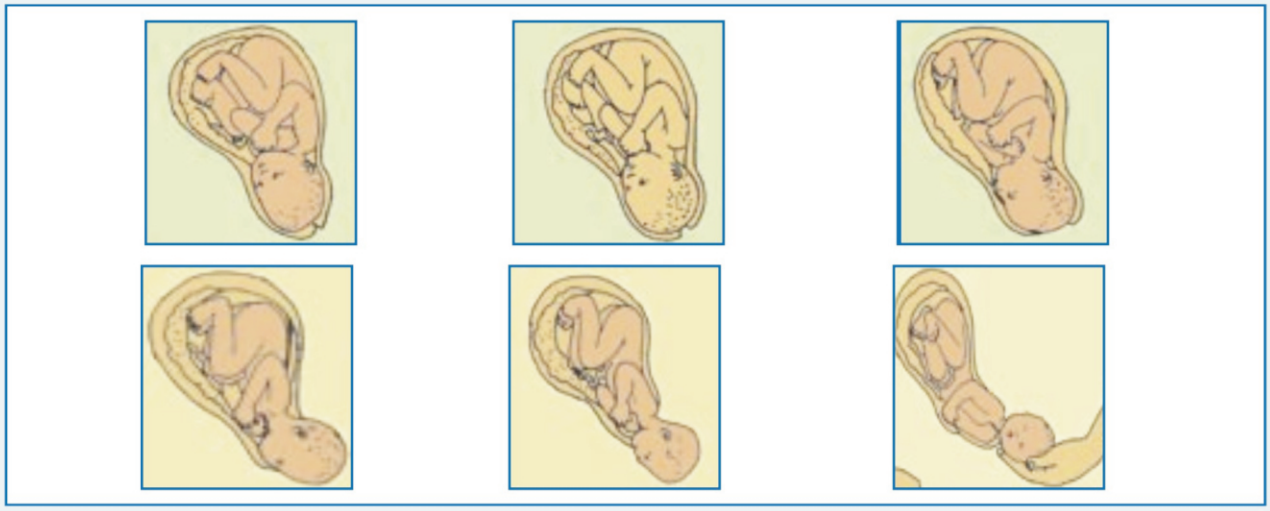

चित्र 2

प्रसव का दूसरा भाग :

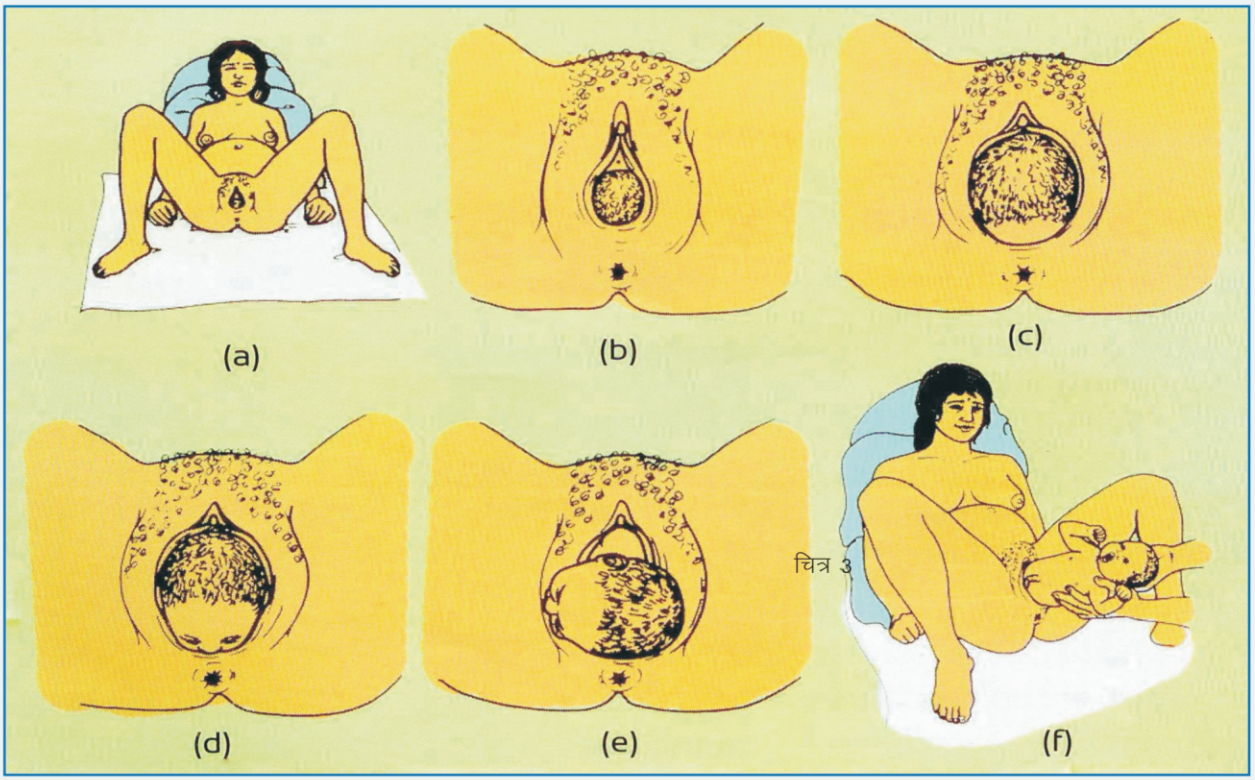

चित्र 3

इस भाग में संकुचन के द्वारा नवजात शिशु बाहर निकलता है। सबसे पहले सिर बाहर आता है उसके बाद आंखें, नाक और मुँह दिखाई पड़ता है। अधिकांश शिशु की आंखे जमीन की ओर होती है। जब शिशु का जन्म होता है, सबसे पहले सिर बाहर आता है, और वह एक तरफ मुड़ता है, और उसके बाद उसका कंधा और शेष शरीर का हिस्सा बाहर निकल आता है। बाहर आने के बाद बच्चा रोता है। शिशु की नाल माँ के बच्चेदानी में आवल से जुड़ी होती है। इस तरह बच्चे का जन्म होता है। इस भाग मे प्रायः 1 घण्टा लगता है।

प्रसव का तीसरा भाग :

इस भाग में संकुचन के कारण से आंवल बच्चेदानी से अलग होता है और फिर शरीर से बाहर आ जाता है। इस भाग मे प्रायः 15 से 20 मिनट लगता है।

अध्याय–5

अधिक खतरे वाले नवजात की पहचान और देखभाल

अधिक खतरे वाले नवजात की पहचान करना :

नवजात जिसमे एक या अधिक निम्नलिखित लक्षण दिखाई दें

- जन्म के समय नवजात का वजन 2 किलो से कम होना।
- समय से पूर्व जन्म – गर्भावस्था की अवधि 8 महीने व 14 दिन से कम होना अर्थात प्रसव की संभावित तिथि से 21 दिन या अधिक पहले।
- नवजात का पहले दिन स्तनपान नही करना।

उदाहरण :

- सीता का जन्म 3 जून को 8 माह 4 दिन में हुआ। उसका वजन 1 किलो 900 ग्राम था। क्या वह कम अवधि में पैदा हुई हैं ? उसका वजन क्या ठीक हैं ? क्या उसको ज्यादा खतरा हैं ?
- धरम का जन्म 8 माह 24 दिन में हुआ और उसका वजन 2.4 किलो था। क्या वह कम अवधि में पैदा हुई हैं ? उसका वजन क्या ठीक हैं ? क्या उसको ज्यादा खतरा हैं ?

अधिकाशं शिशु जो कम अवधि में जन्म लेते हैं उनका जन्म के समय वजन भी कम रहता हैं। किन्तु कुछ शिशु जो पूरी अवधि में जन्म लेते हैं उनका भी वजन कम हो सकता हैं। ऐसा निम्न लिखित कारणों से हो सकता है :–

- माँ की ऊँचाई कम है।
- माँ का वजन कम था।
- कम अंतराल में गर्भधारण।
- कम उम्र में माँ बनी हो।
- माँ को गर्भावस्था के दौरान पर्याप्त भोजन नहीं मिला।
- गर्भावस्था के दौरान बीमार पड़ी।
- माँ को खून की कमी थी।
- माँ को गर्भावस्था के दौरान पर्याप्त आराम नहीं मिला और ज्यादा काम करना पड़ा।

कम वजन वाले बच्चों को कैसे ज्यादा खतरा होता हैं :

- कम वजन वाले बच्चों में चर्बी कम होती है, चमड़ी पतली होती है और सर बड़ा होता है। इससे उसको जल्दी ठण्ड लगने का खतरा होता है।
- इन शिशुओं को संक्रमण का खतरा अधिक रहता है।
- इन शिशुओं को स्तनपान करने में ज्यादा कठिनाई होती है। क्योंकि वे इतना कमजोर होते हैं कि माँ के दूध को सही ढंग से चूस नहीं पाते।

कम वजन वाले नवजात को मृत्यु का खतरा ज्यादा रहता हैं :

- यदि नवजात का वजन ढाई किलो से अधिक है तो 100 में से एक नवजात के मरने का खतरा रहता है।
- यदि नवजात का वजन दो से ढाई किलो है तो 100 में से 6 नवजात के मरने का खतरा रहता है।
- यदि नवजात का वजन दो किलो से कम है तो 100 में से 36 नवजात के मरने का खतरा रहता है।
- यदि नवजात का जन्म कम अवधि में हुआ है तो 100 में से 36 नवजात के मरने का खतरा रहता है।

ज्यादा खतरे वाले नवजात के जन्म पश्चात तुरंत देखभाल में क्या विशेष ध्यान रखना चाहिए :

- शिशु को हाथ धोने के बाद ही पकड़ें।
- कमरे को गर्म रखें।
- बच्चे को तुरंत सुखा लें।
- बच्चे को माँ से सटाकर रखें। और ढककर रखें। और टोपी भी जरूर पहनाएं। बच्चे को गर्म रखने के लिए सभी विधि अपनाएं।
- स्तनपान शुरू करें। इन बच्चों को ज्यादा बार स्तनपान कराने की जरूरत होती है।
- हर दो घण्टे में स्तनपान जरूर कराएं।
- अगर बच्चा सो भी रहा हो तो भी उसे उठाकर पिलाएं। ऐसा तब तक करते रहें जब तक बच्चे का वजन ठीक न हो जाये।

ऐसे नवजात की पहचान करना आवश्यक है जिससे हम उनकी देखभाल और ईलाज को समय पर किया जाना सुनिश्चित कर सकें। 10 में से 4 बच्चों में यह समस्या होने की सम्भावना रहती है।

नवजात में खतरे से बचाव हेतु परिवार को सलाह :

नीचे दिये हुए जानकारी से अधिक खतरे वाले नवजात की जान बचाई जा सकती है।

1. नवजात को खाली बदन नहीं रखें। उसे हमेशा ढक कर रखें। जन्म पश्चात प्रथम दिन से नवजात को कम्बल में लपेट कर रखें। अगर नवजात अधिक समय तक खाली बदन है तो सम्भावना है कि, उसके शरीर का तापमान कम होने लगे और उसे सर्दी/ठण्ड लगने का खतरा है। यह नवजात के लिये खतरनाक हो सकता है।
2. जब तक नवजात का वजन अच्छी तरह नहीं बढ़ने लगे उसे नहलाना नहीं चाहिए। जल्दी नहला देने से उसके बीमार होने और उसको सर्दी लगने का खतरा होता है।
3. माता को स्तनपान के पहले अपने हाथ धोने चाहिए और यदि उसके हाथों के नाखुन बढ़े हुये हो तो उसे काट लेना चाहिए। इससे नवजात को संक्रमण के खतरे से बचा सकते है।
4. शौच के पश्चात परिवार के सभी सदस्यों को साबुन से अपने हाथ को धोना चाहिए और इसके बाद ही नवजात को छूना चाहिए।

5. खतरे के लक्षण वाले नवजात को हर दो घण्टे में स्तनपान कराना चाहिए।
6. अगर नवजात कमजोर हैं और वह स्तन को अच्छी तरह नहीं चूस पा रहा है तब भी माता को स्तनपान जारी रखना चाहिए। ऐसे में एक कप या कटोरे को गर्म पानी से धोकर उसमें मां के स्तनों से दूध निकालकर चम्मच से पिलाना चाहिए। साथ ही सीधा स्तन से दूध पिलाने की कोशिश भी बीच–बीच में करते रहना चाहिए।
7. अगर खतरे के लक्षण वाले नवजात का तीसरे सप्ताह में भी वजन बढ़ना शुरू नहीं होता है तो मितानिन से तुरंत संपर्क करें।

यदि नवजात में निम्न में से कोई भी लक्षण दिखाई दे तो मितानिन से मिलें :

- नवजात सुस्त है या बेहोश है।
- स्तनपान छोड़ दिया है।
- छाती अंदर धंस रही है।
- सांसे तेज चल रही है।
- बुखार है।
- शरीर ठण्डा है।

यदि मितानिन जन्म के दिन नहीं पहुंच पाई तो अधिक खतरे वाले नवजात को कैसे पहचानेंगी? :

यदि मितानिन जन्म के समय उपस्थित नही हो सकी है व पहली गृहभेंट करने मे देरी हुई है तो ऐसी स्थिति में वह जब भी उस परिवार मे गृहभेंट के लिए जाए, नवजात का वजन कर लें। ऐसी स्थिति में नीचे दिये गये डिब्बे को देखकर निर्धारित करे कि वह अधिक खतरे वाला नवजात है कि नहीं :

नवजात का प्रथम वजन कब हुआ	शिशु का वजन	स्थिति
1 से 14 दिन	2 किलो से कम	अधिक खतरे वाला नवजात
15 से 21 दिन	2 किलो 100 ग्राम से कम	अधिक खतरे वाला नवजात
22 से 27 दिन	2 किलो 200 ग्राम से कम	अधिक खतरे वाला नवजात
28 वां दिन	2 किलो 300 ग्राम से कम	अधिक खतरे वाला नवजात

अधिक खतरे वाले नवजात के लिए मितानिन को क्या विशेष प्रयास करना है।

- प्रसव पश्चात गृहभेंट की संख्या बढ़ा दें व गृहभेंट को 2,3,4,5,6,7,9,12,15,18,21,24 व 28 दिन अवश्य करें।
- नवजात का वजन 7,15,21,28 दिन पर अवश्य करें।
- खतरे के लक्षण की जानकारी परिवार को दें। व उन्हे समझाऐं कि ऐसे शिशु के विशेष देखभाल की आवश्यकता क्यों है।
- स्तनपान कराने के तरीके का आंकलन करें व स्थिति अनुसार मां को सुझाव दें। माता की प्रशंसा करें जिससे वह प्रोत्साहित हो। माता द्वारा शिशु को ऊपरी आहार देने से मना करें।
- नवजात जिनका वजन जन्म के 28 वे दिन के बाद भी 2 किलो 300 ग्राम से कम है उनके मरने की संभावना ज्यादा होती है। मितानिन दूसरे महीने भी इस परिवार के पास जाना जारी रखें। दूसरे माह वह अपने भ्रमण को हर सप्ताह में एक दिन करें। व इसी दिन नवजात का वजन लें।

अध्याय–6

नवजात शिशु का सांस रूकना - इसका पता करना एवं उसका प्रारंभिक ईलाज करना

सभी प्राणियों को जीवित रहने के लिऐ हवा की आवश्यकता होती है। मां के गर्भ मे बच्चा, मां के गर्भनाल के सहारे खून से सांस लेता है। जब शिशु बाहर आ जाता है, तो वह स्वयं ही सांस लेने लगता है। इसी कारण वह रोता है। पर कुछ शिशु सांस नही ले पाते। उन्हें मदद की जरूरत होती है।

प्रसव से पहले क्या तैयारी करनी है :

- मितानिन परिवार वालो से चर्चा करके 3 या 4 साफ सूती और धूप में सुखाए कपडो की व्यवस्था कर ले।
- प्रसव के समय माँ के पेट पर एक साफ सूती कपड़ा बिछा लें।

सांस रूकने की समस्या को कैसे पहचानेंगे ? :

- सांस रूकने की समस्या को जानने के लिए देखेंगे कि बच्चा सांस नहीं ले रहा है अथवा बहुत कम ले रहा है अथवा बच्चा रो नहीं रहा है अथवा बच्चे की सांस अटक रही है। यदि इनमें से कोई लक्षण दिखे तो इसका अर्थ है कि सांस रूकने की समस्या है।
- जब प्रसव के पहले भाग का अंत होता है और झिल्ली फूटती है तो उसमें से पानी बाहर आता है।
- यदि यह पानी साफ पानी जैसा है तो यह सामान्य स्थिति है, परंतु यदि पानी गहरे हरे रंग का निकले तो समझ लेना है कि बच्चे को सांस रूकने की समस्या हो सकती हैं। इसलिए मितानिन उसी समय से तैयार रहे कि शिशु को सांस में मदद की जरूरत पड़ेगी।

सांस रूकने की समस्या का ईलाज करना :

- दाई नवजात के बाहर आते ही उसे माँ के पेट पर बिछाये हुये कपड़े पर रखें व मितानिन उसी कपड़े से वही पर नवजात को पकड़कर पोछ ले और गीला कपडा हटा दें।
- मितानिन देखे कि बच्चे ने सांस लेना अथवा रोना षुरू किया है कि नहीं। यदि बच्चा सांस लेना अथवा रोना शुरू कर देता है तो मितानिन उसकी सामान्य देखभाल अर्थात बच्चे को अच्छे से लपेटना व माँ के पास देना व उसका स्तनपान शुरू करवाने पर ध्यान देगी। और यदि बच्चा नहीं रोया तो बच्चे के तलवे पर उंगली से दो बार चोट करेगी। यदि अभी भी बच्चा नहीं रोता है तो बच्चे की पीठ को दो बार पोछेगी।

अध्याय–7

नवजात के ठण्डे होने की समस्या की पहचान, बचाव व ईलाज

नवजात को प्रसव के बाद गर्म रखना क्यों जरूरी हैं ? :

ठण्ड लगने से नवजात के शरीर की अपनी ऊर्जा नष्ट हो जाती है। इससे वह कमजा हो जाता है और वह बीमार पड़ सकता है। इससे नवजात की मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए प्रसव के तुरन्त बाद से नवजात को गर्म रखना जरूरी है।

ज्यादातर नवजात को ठण्ड लगने की सम्भावना कब होती हैं ? और उन्हें ठण्ड क्यों लगती हैं ? :

जन्म लेने के शुरूआती मिनटों में नवजात का शरीर ठण्डा पड़ने का खतरा रहता है। जन्म के समय नवजात का शरीर गीला होता है। अगर ऐसी स्थिति में उसे गीला और खाली बदन रहने दिया जाएँ तो उसको बहुत तेजी से ठण्ड लगती है। जन्म के समय नवजात की त्वचा बहुत पतली और मुलायम होती हैं। इससे वह ठण्ड का मुकाबला नहीं कर पाता। उसके शरीर की तुलना में उसका सिर बड़ा होता है। इसलिए उसको सिर से भी ठण्ड लग जाती है। जन्म के समय नवजात में अपने शरीर के तापमान को संतुलित बनाये रखने की क्षमता नहीं होती है।

इस स्थिति में नवजात को प्रसव के तुरंत बाद पोछकर सूखा रखना चाहिए और उसके शरीर और सिर को अच्छी तरह ढककर रखना चाहिए जिससे उसका शरीर गर्म रहे। प्रसव वाला कमरा भी गर्म रखना चाहिए। प्रसव के तुरंत बाद यह सावधानियां नहीं रखने से नवजात के शरीर का तापमान जन्म के 10–20 मिनट के अंदर 2–4 डिग्री तक कम हो सकता है। नवजात को जल्दी नहला देना उसको बीमार कर सकता है और उसकी जान को खतरे में डाल सकता है। बच्चे को माँ के नजदीक रखना और जल्दी स्तनपान कराना भी ठण्ड से बचाता है।

नवजात ठण्डा होने की समस्या के साथ क्या प्रभाव दिखाई देने लगता है ? :

नवजात जिसका शरीर ठण्डा है और तापमान सामान्य से कम है उनमें निम्न प्रभाव दिखाई देंगे

- नवजात सुस्त होगा और माता के स्तन को चूसने की क्षमता कम होगी। जिससे नवजात समय पर स्तनपान नहीं कर सकेगा और कमजोर हो जाएगा।
- कमजोर होने के कारण उसे संक्रमण का खतरा ज्यादा हो जाएगा।
- खासकर कम वजन के बच्चे और समय से पूर्व जन्म नवजात के मरने की संभावना ज्यादा होगी।

मितानिन किस तरह पहचाने कि नवजात को ठण्ड लगने की समस्या हुई है :

- माँ से पूछकर जाने कि यदि बच्चे का स्पर्श उसे ठण्डा लग रहा है।
- और सबसे अच्छा तरीका हैं की नवजात का तापमान नापें और पता करें।
- अगर ऊपर लिखे तरीकों द्वारा पता न कर पाये तो हाथ के पिछले हिस्से से नवजात के पैर और बगल का तापमान देखे। यदि नवजात का पैर और बगल दोनो ठण्डे महसुस हो रहे हो तो उसको ठण्डा होने की समस्या हो चुकी है।

यदि उपरोक्त में से एक भी स्थिति हां है तो शिशु को ठण्डा होने की समस्या है।

नवजात शिशु का सही तापमान क्या होना चाहिए ?

- नवजात का सही तापमान – 97 से 98.6 तक।
- नवजात ठण्डा होना शुरू हो रहा है – 95 से 97 तक तापमान।
- नवजात को बहुत ठण्डा होने की समस्या हो चुकी है – 95 से कम तापमान ।

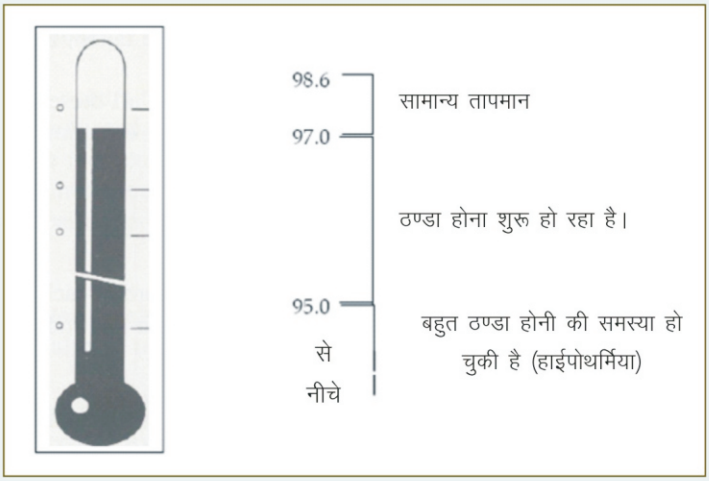

बच्चा यदि ठण्डा हो गया हो तो उसे कैसे गर्म करेंगे ? :

कंगारू विधि इसका मुख्य तरीका है।

यदि माँ और बच्चे को साथ में रखना संभव नहीं हो तो नवजात को कैसे गर्म करना है?

- पिता भी अपनी छाती से लगाकर बच्चे को गर्म रख सकता है।
- अन्य महिला भी बच्चे को कंगारू विधि से रख सकती है।
- कपड़े को गर्म करके बच्चे की सेकाई करें।
- कमरे को गर्म रखें।
- मां व बच्चे को एक साथ सुलाएं।
- सर्दी के मौसम में तो मां व बच्चे को एक रजाई, या कम्बल या शाल या मोटी चादर से ढक दें।
- अगर अस्पताल ले जा रहे हो तो भी रास्ते में नवजात को गर्म रखना बहुत जरूरी है।

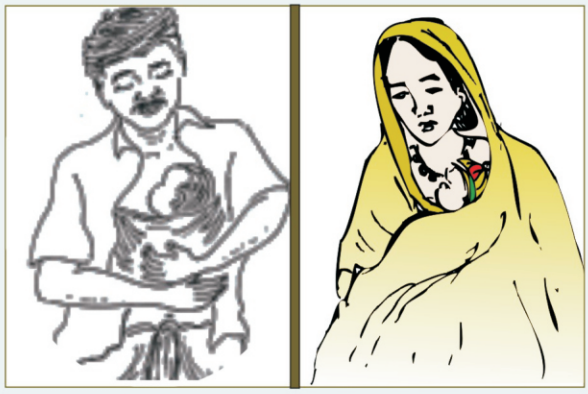

अध्याय–8

स्तनपान के विषय में कुछ नई जानकारी सीखना व पहली सीखी जानकारी को दोहराना

स्तन मे दूध कैसे बनता है :

1. गर्भावस्था के अंतिम चरण में गर्भवती महिला का शरीर नवजात को स्तनपान देने के लिये तैयार हो रहा होता है। इस समय गर्भवती का स्तन आकार में बड़ा हो जाता है जिससे पर्याप्त मात्रा में दूध स्तन में बन सके। प्रसव के समय स्तन में दूध तैयार हो जाता है। इसलिए प्रसव के तुरंत बाद नवजात को स्तनपान कराना संभव रहता है।
2. दूध बनने के लिए पहले दिमाग से स्तन तक संदेश पहुंचता है। यदि माँ खुश रहती है, आरामदायक स्थिति में रहती है व चिन्ता से दूर रहती है, तो दिमाग से यह संकेत स्तन तक अच्छी तरह पहुंचता है और दूध बनने में सुविधा होती है।
3. स्तन के चित्र को देखें। इसमें स्तन के अंदर की बनावट को दिखाया गया है। पहले अंगूर के आकार की ग्रंथियो में दूध बनता है और फिर आगे आकर जमा होता है। इस तरह दूध स्तन के गहरे रंग के गोल हिस्से के अंदर रहता है। इसलिए बच्चा अच्छी तरह दूध पी सके इसके लिये यह जरूरी है कि लगाव सही हो। बच्चा जब मुंह से स्तन के गहरे रंग के गोले को नीचे से दबाता है तो उसे सही तरह से दूध मिलता है।
4. स्तन में पहले पतला और फिर गाढ़ा दूध बनता है। बच्चे के लिए यह दोनो तरह का दूध मिलना आवश्यक है। इसलिए बच्चे को पहले एक ही स्तन से 10–15 मिनट तक दूध पिलाना चाहिए और उसके बाद दूसरे स्तन से। यदि जल्दी–जल्दी स्तन बदला जाता है तो बच्चे को सही आहार नहीं मिल पाता है और इससे उसे परेशानी हो सकती है।

बच्चे के स्तनपान का आकलन कैसे करें ? :

स्तनपान की समस्याओं का इलाज करना व इससे बचाव करना माँ को सही जानकारी व मदद देने से संभव है। सही लगाव न होने से क्या समस्याएं हो सकती है – चूचक सूज जाते है, बच्चे को कम दूध मिल पाता है, दूध कम बनने लगता है, और बच्चे का वजन घटने लगता है। बच्चा अगर कुछ दिन तक नहीं पीयेगा तो क्या होगा – देर से स्तनपान शुरू होने पर स्तन कड़ा अर्थात ज्यादा भर जाने की समस्या हो सकती है। स्तन कड़ा होने पर बच्चे को दूध पीने में कठिनाई होती है इससे माँ को भी बहुत तकलीफ हो सकती है। इससे बचने का तरीका है कि जन्म के आधे घण्टे के अंदर स्तनपान शुरू हो और जब बच्चा चाहे तब दूध पिलाते रहें।

निम्नलिखित विधि द्वारा मितानिन स्तनपान का आंकलन कर सकती है :

स्तनपान का आकलन करने का तरीका

अच्छे स्तनपान की पहचान	सम्भावित समस्या की पहचान
माता का शरीर आरामदायक अवस्था में है माता ने नवजात को अच्छी तरह पकड़ा है और स्नेह से नवजात को देख रही है। माता के स्पर्श में स्नेह और प्यार है।	माता का तनाव में होना, माता नवजात पर झुकी है और माता का बच्चे से जुड़ाव और स्पर्श कमजोर है।
• ठोढी का स्तन से छूना • मुँह पूरा खुला होना • निचला होंठ बाहर की तरफ मुड़ा होना। • नीचे की अपेक्षा ऊपर एरियोला ज्यादा दिखना। 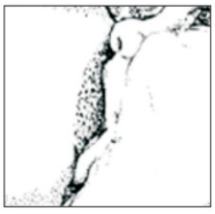	नवजात का मुँह पूरी तरह नहीं खुला है। स्तनपान के समय स्तन का ऐरियोला वाला हिस्सा दिखाई दे रहा है। नवजात ने चूचक को हल्के से पकड़ा है।
यदि बच्चा धीमा–गहरा चूस रहा है और बीच–बीच में रूकता है तो वह स्तन प्रभावी ढंग से चूस रहा है।	स्तन को तेजी से चूसना, गालों का खिचा हुआ होना।

अच्छे स्तनपान की पहचान	सम्भावित समस्या की पहचान
बच्चा शांत है और ध्यान से स्तनपान कर रहा है, माता को महसूस हो रहा है कि बच्चेदानी सिकुड़ रही है। कभी–कभी स्तनपान के समय कुछ दूध बाहर भी निकल आता है जिससे माता यह समझे कि बच्चा स्तनपान कर रहा है।	नवजात चिड़चिड़ा है और रो रहा है। बच्चे के मुँह से स्तन का बार–बार छूट जाना, दूध का स्तन से नहीं आना।
स्तनपान के पश्चात् स्तन का मुलायम होना, चूचक का भाग आगे की तरफ निकलना।	स्तनपान के पश्चात् भी स्तन में सूजन का होना, चूचक का लाल होना और उसमें दरार होना।

किन परिस्थितियों में मां का दूध निकालकर बच्चे को पिलाए :

1. मां बीमार हो।
2. बच्चा छोटा अथवा कमजोर हो और स्तनपान न कर पा रहा हो।
3. बच्चे के मुंह में छाले हो।
4. माता के स्तनों में दूध ज्यादा हो जिसके कारण बच्चा चूचक न पकड़ पा रहा हो।
5. यदि मां घर से बाहर काम करती हो।

जल्दी स्तनपान शुरू कराना क्यों जरूरी है ? :

जल्दी स्तनपान शुरू करने से नवजात के शरीर को आहार मिलता है। इससे उसको ताकत मिलती है। इससे उसको ठण्ड लगने के खतरे से भी बचाव होता है। इससे बीमारी से लड़ने की ताकत आती है। जल्दी मां का दूध मिल जाने से नवजात बीमारी से बचता है।

मां का पहला गाढ़ा दूध नवजात को पिलाना क्यों जरूरी है ? :

मां का पहला गाढ़ा दूध पीने से नवजात के शरीर में बीमारी से लड़ने की ताकत आती है। इससे उसका पेट और पाचन भी ठीक रहता है।

यदि कोई मां कहती है कि उसको दूध नहीं आ रहा है तो क्या करें ? :

मितानिन मां को समझाए कि नवजात को स्तनपान कराने की कोशिश करती रहे। कोशिश करने से दूध आने लगेगा। मां का हौसला बढ़ाना चाहिये। उसे चिन्ता से दूर रहना चाहिये। मां आरामदायक स्थिति में बच्चे को नजदीक रखकर पिलाने की कोशिश करेगी तो दूध आने लगेगा।

यदि किसी मां को कोशिश करने पर भी दूध नहीं आ रहा हो तो अन्य शिशुवती महिला का दूध नवजात को दिलाना चाहिए। यदि किसी परिस्थिति में यह भी संभव न हो तो आखिरी में गाय का दूध देना पड़ सकता है।

यदि बाहर का दूध मजबूरी में देना भी पड़े तो साफ कटोरी चम्मच का उपयोग करें। किसी भी स्थिति में बोतल से दूध न पिलाएं। बोतल से बच्चे को बीमारी होने का खतरा ज्यादा होता है।

बच्चा यदि इतना कमजोर है कि स्तन से दूध नहीं पी पा रहा है तो क्या करना चाहिए ? :

जो बच्चे कम वजन के पैदा होते हैं, उनमें यह समस्या आ सकती है। ऐसे बच्चे कमजोर होने के कारण माँ के स्तन से दूध नहीं चूस पाते। माँ के स्तन से दूध कटोरी में निकालकर बच्चे को कटोरी व चम्मच से पिलाना चाहिए। इससे बच्चे के शरीर को कुछ ताकत मिलेगी। फिर कुछ समय बाद उसे सीधा माँ के स्तन से दूध पिलाने की कोशिश करनी चाहिए।

अध्याय–9

नवजात में गंभीर संक्रमण की पहचान, प्रारंभिक ईलाज व रेफरल

नवजात में संक्रमण पहले उसके शरीर के एक भाग में आता हैं जैसे कि चमड़ी में, फेफड़े में अथवा खून में। यह संक्रमण बहुत जल्दी नवजात का शरीर जो कि बहुत नाजुक होता है उसमें पूरी तरह फैल जाता है। इससे बच्चा सुस्त या बेहोश हो जाता है, रोना या दूध पीना छोड़ देता है अथवा ठण्डा पड़ जाता है। इसे गंभीर संक्रमण कहते है।

हमारे देश के गांव में बहुत से नवजात को गंभीर संक्रमण की समस्या होती है। 10 में से एक बच्चा इसका शिकार अपने जीवन के पहले माह में ही हो जाता है। नवजात में गंभीर संक्रमण बहुत खतरनाक होता है। अधिकांश स्थानों में नवजात मृत्यु का यह सबसे बड़ा करण है। बिना इलाज के बहुत से बच्चे गंभीर संक्रमण के कारण मर जाते है। इलाज करने पर अधिकांश को बचाया जा सकता है।

नवजात में गंभीर संक्रमण के मुख्य कारण क्या होते है :

- मां को गर्भावस्था या प्रसव दौरान संक्रमण हुआ हो।
- प्रसव यदि सही तकनीक से नहीं कराया गया है – जैसे प्रसव पूर्व हाथ का सही तरह से नहीं धोना, दाई द्वारा प्रसव कराते समय योनि में हाथ डाला जाना, गंदे ब्लेड का नाल काटने में उपयोग, नाल को बांधने में गंदे धागे का उपयोग किया हो।
- यदि नाल साफ और नये ब्लेड से नहीं काटा गया है और नाभि पर विभिन्न तरह की चीजों का उपयोग किया गया हो।
- नवजात कमजोर है और समय से पूर्व जन्मा है। या नवजात का वजन 2 किलो से कम है।
- यदि स्तनपान सही तरह नहीं कराया गया हो, जन्म के तुरन्त बाद नहीं कराया गया हो, बाहरी वस्तु खिलाई पिलाई गई हो, तो नवजात कमजोर हो जाता है और उसमें संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है।
- प्रसव पश्चात् यदि नवजात को ठंड लग गई हो।
- यदि नवजात किसी बीमार व्यक्ति के नजदीक लाया गया हो।

क्या गंभीर संक्रमण से बचाव किया जा सकता है ? हाँ । कैसे ? :

1. साफ सफाई रखने से बचाव होगा। कौन सी साफ सफाई से ?

- दाई प्रसव से पहले हाथ धो ले और माँ के शरीर में हाथ न घुसाएं।
- दाई साफ ब्लेड का उपयोग करें।
- मितानिन व अन्य लोग नवजात को छूने से पहले हाथ धोएं।
- माँ शौच के बाद बच्चे के मल को निपटाने के बाद हाथ जरूर धोए।
- शिशु किसी बीमार व्यक्ति के संपर्क में न आये।
- नाल को साफ व सूखा रखें।

2. बच्चे को गर्म रखने से बचाव होता है। कैसे गर्म रखना है ?

- बच्चे के पैदा होते ही उसको पोंछकर सुखा दे।
- पोछने के बाद सुखे कपड़े में लपेट दे।
- माँ के निकट रखे और स्तनपान शुरू करवा दें।
- शिशु को कपड़ा पहनाकर रखें।
- कम वजन का हो तो कंगारू विधि से जरूर गर्म रखें।
- जन्म के कुछ दिन बाद ही नहलाना शुरू करें।

3. स्तनपान शुरू कराने से बचाव होता है। इस विषय में क्या ध्यान देना है ?

- जन्म के आधे घण्टे में स्तनपान की शुरूआत करनी चाहिए।
- बच्चा जब जब मांगे तब तब पिलाना चाहिए।
- हर दो तीन घण्टे में पिलाते रहना चाहिए।
- माँ के दूध के अतिरिक्त कोई बाहरी चीज नहीं खिलाना पिलाना चाहिए।

मितानिन को प्रत्येक गृह भेट में सलाह देते हुए नवजात की ऐसी देखभाल को बढ़ावा देना है जिससे गंभीर संक्रमण से उसका बचाव हो। विषेष तौर पर वे देखे कि बच्चा गर्म रहे व स्तनपान ठीक से चलता रहे।

नवजात में गंभीर संक्रमण की पहचान :

नवजात संक्रमण को पहचानने के लिए दिए गए सात बिन्दुओं में से यदि दो या अधिक किसी नवजात में दिखें तो इसका अर्थ है कि, उसको गंभीर संक्रमण हुआ है।

नवजात में संक्रमण पहचान प्रपत्र

मां का नाम ———————————————— गांव ————————————————

मितानिन का नाम ————————————————————————————————

मितानिन जिस दिन नवजात के घर जाए, निम्न लक्षणों की जाँच करें। जिस दिन कोई लक्षण दिखाई दे उस दिन के नीचे व उस लक्षण के सामने ✓ का निशान लगायें।

	2	3	4	5	6	7	9	12	15	18	21	24	28	अन्य दिन		
1. नवजात सुस्त अथवा बेहोश है																
2. स्तनपान कम कर दिया है अथवा छोड़ दिया है																
3. रोना धीमा पड़ गया है अथवा रोना बंद कर दिया है																
4. बच्चा ठण्डा हो गया है (मां से पूछे) अथवा उसको बुखार है (थर्मामीटर से देखें कि 99° से अधिक है या नहीं)																
5. पेट फूला हुआ है अथवा मां कहती है कि शिशु बार –बार उल्टी कर रहा है 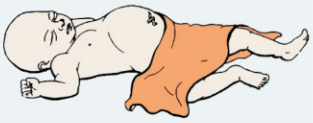																
6. पसली अंदर धंस रही हैं अथवा सांस की गति 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक है अथवा सांस लेने में घुरघुराहट की आवाज होती है																
7. नाभि में मवाद है अथवा त्वचा पर फुंसी है 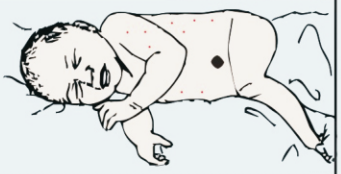																
इस दिन पाये कुल लक्षण																

नवजात गंभीर संक्रमण का सही इलाज :

1. यदि किसी भी दिन नवजात में दो या अधिक बिन्दु मिलते हैं तो इसका अर्थ हैं कि इसको गंभीर संक्रमण हुआ है। ऐसे नवजात को तुरंत कोट्रीम की पहली खुराक (कोट्रीम सिरप का आधा चम्मच अथवा कोट्रिम सिरप की शीशी का आधा ढक्कन) पिला दे। फिर परिवार को समझाएं कि यह स्थिति नवजात के जीवन के लिए खतरा है। परिवार को समझाए कि इसका सही इलाज है – ए.एन.एम. अथवा अस्पताल तक नवजात को ले जाना और पाँच दिन तक आवश्यक सुई व दवा दिलवाना। ध्यान रखें कि उनको ऐसे अस्पताल में भेजे जिसमें उस समय डॉक्टर या नर्स मिलेंगे। मितानिन उनको आश्वस्त करें कि वहां बच्चे का सही इलाज होगा। यह भी समझाए कि परिवार द्वारा लापरवाही करने से बच्चे की जान भी जा सकती है। मितानिन उनके साथ अस्पताल तक जाए और तब तक रहे जब तक डॉक्टर अथवा नर्स द्वारा बच्चे को न देख लिया जाए।
2. यदि ऊपर दी गई सलाह देने पर परिवार जाने के लिए हाँ बोलते हैं, तब भी मितानिन कुछ समय में देख ले कि वे वास्तव में गये है या नहीं। यदि परिवार जाने में इच्छुक नहीं है अथवा अन्य किसी करण से नहीं जा पाते हैं, तो उन्हें स्थानीय ए.एन.एम. के पास जाकर दिखाने व पांच दिन तक उससे सुई लगवाने की सलाह दें। इस काम में भी मितानिन को परिवार के साथ जाने की कोशिश करनी चाहिए।
3. यदि परिवार मितानिन की सब कोशिश के बावजूद भी बच्चे को इलाज के लिए अस्पताल अथवा ए.एन.एम. तक नहीं ले जाता है तो उन्हें समझाएं कि अस्पताल अथवा ए.एन.एम. के पास पूरा इलाज अर्थात सुई और दवा दोनो मिलेंगे। यदि फिर भी आप नहीं जा पा रहे हो तो यहां घर पर मितानिन केवल दवा वाला हिस्सा ही कर सकती है। कोट्रीम की दवा सात दिन तक देने से बच्चे का आधा इलाज हो पाएगा। इससे हो सकता है कि बच्चा बच जाए अथवा नहीं भी बचे। यदि इस पर भी परिवार अस्पताल या ए.एन.एम. के पास नहीं जाता है तो नवजात को सात दिन तक हर रोज दिन में दो बार कोट्रीम सिरप का आधा चम्मच अथवा कोट्रिम सिरप की शीशी का आधा ढक्कन हर खुराक में दें। यदि कोट्रीम सिरप किसी समय उपलब्ध न हो तो कोट्रीम की एक चौथाई गोली दिन में दो बार दिया जाना चाहिए।

अध्याय–10

नवजात देखभाल में मितानिन की भूमिका

नवजात मृत्यु को कम करने के लिए मितानिन को निम्न लिखित सभी कदमो में सहयोग करना होगा –

1. अपने पारे की सभी गर्भवती की सूची बनाना, उनसे भेट करते रहना व उनको खान–पान, आराम व आंगनवाड़ी जाने की सलाह देना, उनकी प्रसव पूर्व जांच करवाना।
2. 8वें या 9वें माह में परिवार की प्रसव हेतु तैयारी करवाना।
3. प्रसव यदि घर पर हो तो भी उसमें मौजूद रहना। प्रसव के समय तैयारी के साथ पहुंचना व दाई से जरूरी चर्चा करना।
4. प्रसव के तुरंत बाद नवजात के स्तनपान, गर्म रखने व साफ–सफाई की सलाह परिवार को देना। कम अवधि में पैदा हुए नवजात का पता लगाना व बच्चे का वजन करके देखना कि उसको अधिक खतरा है या नहीं। अधिक खतरे वाले नवजात को प्रथम 28 दिन में 13 बार भेट करना (2,3,4,5,6,7,9,12,15,18,21,24 व 28 दिन पर) । अन्य नवजात को प्रथम 28 दिन में 6 बार भेंट (1,3,7,10,15,28 दिन पर) करना।
5. प्रत्येक भेंट में

- नवजात के स्तनपान, गर्म रखने व साफ–सफाई की सलाह देना व परिवार से उसका पालन करवाना।
- नवजात के स्तनपान का आंकलन करना व माँ को मदद करना।
- गंभीर संक्रमण के सात लक्षणों का पता करना। यदि एक ही लक्षण मिले तो वही पर उसके लिए सलाह व ईलाज करना। और यदि एक से अधिक लक्षण एक ही दिन में मिले तो उसे गंभीर संक्रमण मानते हुए उसका पूरा इलाज अस्पताल अथवा ए.एन.एम. के माध्यम से सुनिश्चित करना। यदि यह संभव न हो पाए तो कोट्रिम की पूरी खुराक 7 दिन तक खुराक देना।

6. इसके अतिरिक्त 7,15, 21 व 28वें दिन नवजात का वजन करना व तय करना कि क्या नवजात अभी भी खतरे में है। इस आधार पर गृह भेट की आवश्यकता को तय करना व हर भेट में नवजात के स्तनपान, गर्म रखने व साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दिलाना। यदि 28वें दिन नवजात का वजन 2 किलो 300 ग्राम से कम रहता है तो दूसरे माह भी हर सप्ताह एक बार गृह भेट करेगी।

नवजात में संक्रमण पहचान प्रपत्र

मां का नाम ---------------------------------- गांव ------------------------------

मितानिन का नाम ---

मितानिन जिस दिन नवजात के घर जाए, निम्न लक्षणों की जाँच करें। जिस दिन कोई लक्षण दिखाई दे उस दिन के नीचे व उस लक्षण के सामने ✓ का निशान लगायें।

अन्य दिन

	2	3	4	5	6	7	9	12	15	18	21	24	28			
1. नवजात सुस्त अथवा बेहोश है																
2. स्तनपान कम कर दिया है अथवा छोड़ दिया है																
3. रोना धीमा पड़ गया है अथवा रोना बंद कर दिया है																
4. बच्चा ठण्डा हो गया है (मां से पूछे) अथवा उसको बुखार है (थर्मामीटर से देखें कि 99° से अधिक है या नहीं)																
5. पेट फूला हुआ है अथवा मां कहती है कि शिशु बार -बार उल्टी कर रहा है																
6. पसली अंदर धंस रही हैं अथवा सांस की गति 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक है अथवा सांस लेने में घुरघुराहट की आवाज होती है																
7. नाभि में मवाद है अथवा त्वचा पर फुंसी है																
इस दिन पाये कुल लक्षण																

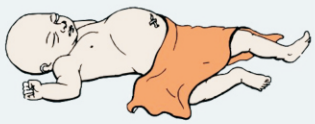

नवजात में संक्रमण पहचान प्रपत्र

मां का नाम ———————————————————— गांव ————————————————

मितानिन का नाम ————————————————————————————————

मितानिन जिस दिन नवजात के घर जाए, निम्न लक्षणों की जाँच करें। जिस दिन कोई लक्षण दिखाई दे उस दिन के नीचे व उस लक्षण के सामने ✓ का निशान लगायें।

अन्य दिन

	2	3	4	5	6	7	9	12	15	18	21	24	28			
1. नवजात सुस्त अथवा बेहोश है																
2. स्तनपान कम कर दिया है अथवा छोड़ दिया है																
3. रोना धीमा पड़ गया है अथवा रोना बंद कर दिया है																
4. बच्चा ठण्डा हो गया है (मां से पूछे) अथवा उसको बुखार है (थर्मामीटर से देखें कि 99° से अधिक है या नहीं)																
5. पेट फूला हुआ है अथवा मां कहती है कि शिशु बार –बार उल्टी कर रहा है																
6. पसली अंदर धंस रही हैं अथवा सांस की गति 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक है अथवा सांस लेने में घुरघुराहट की आवाज होती है																
7. नाभि में मवाद है अथवा त्वचा पर फुंसी है																
इस दिन पाये कुल लक्षण																

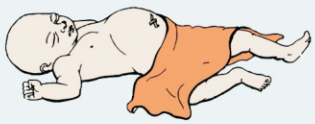

नवजात में संक्रमण पहचान प्रपत्र

मां का नाम ———————————————————— गांव ————————————————

मितानिन का नाम ——————————————————————————————————

मितानिन जिस दिन नवजात के घर जाए, निम्न लक्षणों की जाँच करें। जिस दिन कोई लक्षण दिखाई दे उस दिन के नीचे व उस लक्षण के सामने ✓ का निशान लगायें।

अन्य दिन

	2	3	4	5	6	7	9	12	15	18	21	24	28			
1. नवजात सुस्त अथवा बेहोश है																
2. स्तनपान कम कर दिया है अथवा छोड़ दिया है																
3. रोना धीमा पड़ गया है अथवा रोना बंद कर दिया है																
4. बच्चा ठण्डा हो गया है (मां से पूछे) अथवा उसको बुखार है (थर्मामीटर से देखें कि 99° से अधिक है या नहीं)																
5. पेट फूला हुआ है अथवा मां कहती है कि शिशु बार –बार उल्टी कर रहा है																
6. पसली अंदर धंस रही हैं अथवा सांस की गति 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक है अथवा सांस लेने में घुरघुराहट की आवाज होती है																
7. नाभि में मवाद है अथवा त्वचा पर फुंसी है																
इस दिन पाये कुल लक्षण																

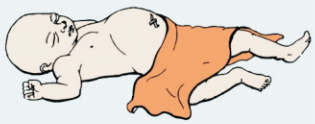

नवजात में संक्रमण पहचान प्रपत्र

मां का नाम ––––––––––––––––––––––––––––– गांव ––––––––––––––––––––––

मितानिन का नाम –––

मितानिन जिस दिन नवजात के घर जाए, निम्न लक्षणों की जाँच करें। जिस दिन कोई लक्षण दिखाई दे उस दिन के नीचे व उस लक्षण के सामने ✓ का निशान लगायें।

अन्य दिन

	2	3	4	5	6	7	9	12	15	18	21	24	28			
1. नवजात सुस्त अथवा बेहोश है																
2. स्तनपान कम कर दिया है अथवा छोड़ दिया है																
3. रोना धीमा पड़ गया है अथवा रोना बंद कर दिया है																
4. बच्चा ठण्डा हो गया है (मां से पूछे) अथवा उसको बुखार है (थर्मामीटर से देखें कि 99° से अधिक है या नहीं)																
5. पेट फूला हुआ है अथवा मां कहती है कि शिशु बार –बार उल्टी कर रहा है																
6. पसली अंदर धंस रही हैं अथवा सांस की गति 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक है अथवा सांस लेने में घुरघुराहट की आवाज होती है																
7. नाभि में मवाद है अथवा त्वचा पर फुंसी है																
इस दिन पाये कुल लक्षण																

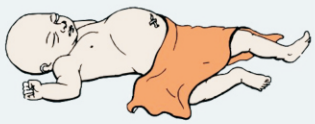

नवजात में संक्रमण पहचान प्रपत्र

मां का नाम ---------------------------- गांव ----------------------

मितानिन का नाम ---

मितानिन जिस दिन नवजात के घर जाए, निम्न लक्षणों की जाँच करें। जिस दिन कोई लक्षण दिखाई दे उस दिन के नीचे व उस लक्षण के सामने ✓ का निशान लगायें।

अन्य दिन

	2	3	4	5	6	7	9	12	15	18	21	24	28			
1. नवजात सुस्त अथवा बेहोश है																
2. स्तनपान कम कर दिया है अथवा छोड़ दिया है																
3. रोना धीमा पड़ गया है अथवा रोना बंद कर दिया है																
4. बच्चा ठण्डा हो गया है (मां से पूछे) अथवा उसको बुखार है (थर्मामीटर से देखें कि 99° से अधिक है या नहीं)																
5. पेट फूला हुआ है अथवा मां कहती है कि शिशु बार –बार उल्टी कर रहा है																
6. पसली अंदर धंस रही हैं अथवा सांस की गति 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक है अथवा सांस लेने में घुरघुराहट की आवाज होती है																
7. नाभि में मवाद है अथवा त्वचा पर फुंसी है																
इस दिन पाये कुल लक्षण																

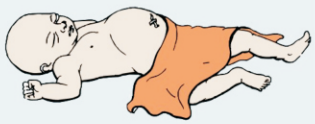

नवजात में संक्रमण पहचान प्रपत्र

मां का नाम -------------------------------- गांव ------------------------

मितानिन का नाम ---

मितानिन जिस दिन नवजात के घर जाए, निम्न लक्षणों की जाँच करें। जिस दिन कोई लक्षण दिखाई दे उस दिन के नीचे व उस लक्षण के सामने ✓ का निशान लगायें।

	2	3	4	5	6	7	9	12	15	18	21	24	28	अन्य दिन		
1. नवजात सुस्त अथवा बेहोश है																
2. स्तनपान कम कर दिया है अथवा छोड़ दिया है																
3. रोना धीमा पड़ गया है अथवा रोना बंद कर दिया है																
4. बच्चा ठण्डा हो गया है (मां से पूछे) अथवा उसको बुखार है (थर्मामीटर से देखें कि 99° से अधिक है या नहीं)																
5. पेट फूला हुआ है अथवा मां कहती है कि शिशु बार -बार उल्टी कर रहा है																
6. पसली अंदर धंस रही हैं अथवा सांस की गति 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक है अथवा सांस लेने में घुरघुराहट की आवाज होती है																
7. नाभि में मवाद है अथवा त्वचा पर फुंसी है																
इस दिन पाये कुल लक्षण																

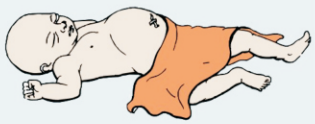

नवजात में संक्रमण पहचान प्रपत्र

मां का नाम ———————————————— गांव ————————————

मितानिन का नाम ——————————————————————————

मितानिन जिस दिन नवजात के घर जाए, निम्न लक्षणों की जाँच करें। जिस दिन कोई लक्षण दिखाई दे उस दिन के नीचे व उस लक्षण के सामने ✓ का निशान लगायें।

अन्य दिन

	2	3	4	5	6	7	9	12	15	18	21	24	28			
1. नवजात सुस्त अथवा बेहोश है																
2. स्तनपान कम कर दिया है अथवा छोड़ दिया है																
3. रोना धीमा पड़ गया है अथवा रोना बंद कर दिया है																
4. बच्चा ठण्डा हो गया है (मां से पूछे) अथवा उसको बुखार है (थर्मामीटर से देखें कि 99° से अधिक है या नहीं)																
5. पेट फूला हुआ है अथवा मां कहती है कि शिशु बार –बार उल्टी कर रहा है																
6. पसली अंदर धंस रही हैं अथवा सांस की गति 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक है अथवा सांस लेने में घुरघुराहट की आवाज होती है																
7. नाभि में मवाद है अथवा त्वचा पर फुंसी है																
इस दिन पाये कुल लक्षण																

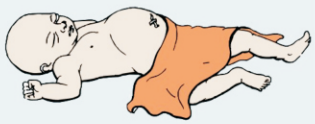

नवजात में संक्रमण पहचान प्रपत्र

मां का नाम ––––––––––––––––––––––––––– गांव –––––––––––––––––––––––

मितानिन का नाम ––

मितानिन जिस दिन नवजात के घर जाए, निम्न लक्षणों की जाँच करें। जिस दिन कोई लक्षण दिखाई दे उस दिन के नीचे व उस लक्षण के सामने ✓ का निशान लगायें।

अन्य दिन

	2	3	4	5	6	7	9	12	15	18	21	24	28			
1. नवजात सुस्त अथवा बेहोश है																
2. स्तनपान कम कर दिया है अथवा छोड़ दिया है																
3. रोना धीमा पड़ गया है अथवा रोना बंद कर दिया है																
4. बच्चा ठण्डा हो गया है (मां से पूछे) अथवा उसको बुखार है (थर्मामीटर से देखें कि 99° से अधिक है या नहीं)																
5. पेट फूला हुआ है अथवा मां कहती है कि शिशु बार –बार उल्टी कर रहा है																
6. पसली अंदर धंस रही हैं अथवा सांस की गति 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक है अथवा सांस लेने में घुरघुराहट की आवाज होती है																
7. नाभि में मवाद है अथवा त्वचा पर फुंसी है																
इस दिन पाये कुल लक्षण																

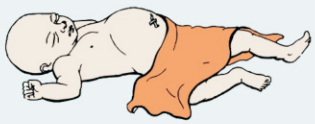

नवजात में संक्रमण पहचान प्रपत्र

मां का नाम ———————————————————— गांव ————————————————

मितानिन का नाम ————————————————————————————————————

मितानिन जिस दिन नवजात के घर जाए, निम्न लक्षणों की जाँच करें। जिस दिन कोई लक्षण दिखाई दे उस दिन के नीचे व उस लक्षण के सामने ✓ का निशान लगायें।

अन्य दिन

	2	3	4	5	6	7	9	12	15	18	21	24	28			
1. नवजात सुस्त अथवा बेहोश है																
2. स्तनपान कम कर दिया है अथवा छोड़ दिया है																
3. रोना धीमा पड़ गया है अथवा रोना बंद कर दिया है																
4. बच्चा ठण्डा हो गया है (मां से पूछे) अथवा उसको बुखार है (थर्मामीटर से देखें कि 99° से अधिक है या नहीं)																
5. पेट फूला हुआ है अथवा मां कहती है कि शिशु बार –बार उल्टी कर रहा है																
6. पसली अंदर धंस रही हैं अथवा सांस की गति 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक है अथवा सांस लेने में घुरघुराहट की आवाज होती है																
7. नाभि में मवाद है अथवा त्वचा पर फुंसी है																
इस दिन पाये कुल लक्षण																

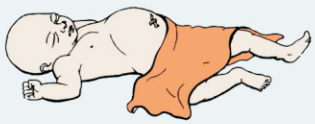

नवजात में संक्रमण पहचान प्रपत्र

मां का नाम ———————————————— गांव ————————————

मितानिन का नाम ———————————————————————————

मितानिन जिस दिन नवजात के घर जाए, निम्न लक्षणों की जाँच करें। जिस दिन कोई लक्षण दिखाई दे उस दिन के नीचे व उस लक्षण के सामने ✓ का निशान लगायें।

अन्य दिन

	2	3	4	5	6	7	9	12	15	18	21	24	28			
1. नवजात सुस्त अथवा बेहोश है																
2. स्तनपान कम कर दिया है अथवा छोड़ दिया है																
3. रोना धीमा पड़ गया है अथवा रोना बंद कर दिया है																
4. बच्चा ठण्डा हो गया है (मां से पूछे) अथवा उसको बुखार है (थर्मामीटर से देखें कि 99° से अधिक है या नहीं)																
5. पेट फूला हुआ है अथवा मां कहती है कि शिशु बार –बार उल्टी कर रहा है																
6. पसली अंदर धंस रही हैं अथवा सांस की गति 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक है अथवा सांस लेने में घुरघुराहट की आवाज होती है																
7. नाभि में मवाद है अथवा त्वचा पर फुंसी है																
इस दिन पाये कुल लक्षण																

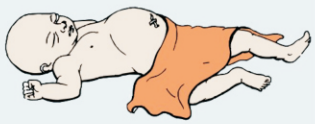

नवजात में संक्रमण पहचान प्रपत्र

मां का नाम ---------------------------- गांव ----------------------

मितानिन का नाम ---

मितानिन जिस दिन नवजात के घर जाए, निम्न लक्षणों की जाँच करें। जिस दिन कोई लक्षण दिखाई दे उस दिन के नीचे व उस लक्षण के सामने ✓ का निशान लगायें।

अन्य दिन

	2	3	4	5	6	7	9	12	15	18	21	24	28			
1. नवजात सुस्त अथवा बेहोश है																
2. स्तनपान कम कर दिया है अथवा छोड़ दिया है																
3. रोना धीमा पड़ गया है अथवा रोना बंद कर दिया है																
4. बच्चा ठण्डा हो गया है (मां से पूछे) अथवा उसको बुखार है (थर्मामीटर से देखें कि 99° से अधिक है या नहीं)																
5. पेट फूला हुआ है अथवा मां कहती है कि शिशु बार -बार उल्टी कर रहा है																
6. पसली अंदर धंस रही हैं अथवा सांस की गति 60 या 60 प्रति मिनट से अधिक है अथवा सांस लेने में घुरघुराहट की आवाज होती है																
7. नाभि में मवाद है अथवा त्वचा पर फुंसी है																
इस दिन पाये कुल लक्षण																

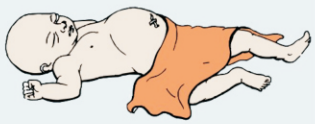

ललना के जतन

खानपान आराम की सलाह देकर
गर्भवती की संस्थागत प्रसव तैयारी
हर आंगन में गुंजे सदा किलकारी
मितानिन कर रही ऐसे मां की तैयारी

चिन्ता करती है मितानिन दीदी
जब मासूम पल रहें है गर्भ में
कैसे स्वस्थ वो दुनिया देख पाए
देती सलाह स्वास्थ के सन्दर्भ में

जन्मे बच्चे को मां का पहला दूध पिलाना
साफ हाथों से बच्चे को पकड़ना सिखाना
बच्चे को गरम रखना जरूरी क्यों समझाना
नवजात के सात संदेशो को पालन कराना

जन्मेमाह में बच्चे के खतरे
की लक्षण कर रही पहचान
तुरन्त उपचार सलाह देकर
बच्चे की बचा रही है जान

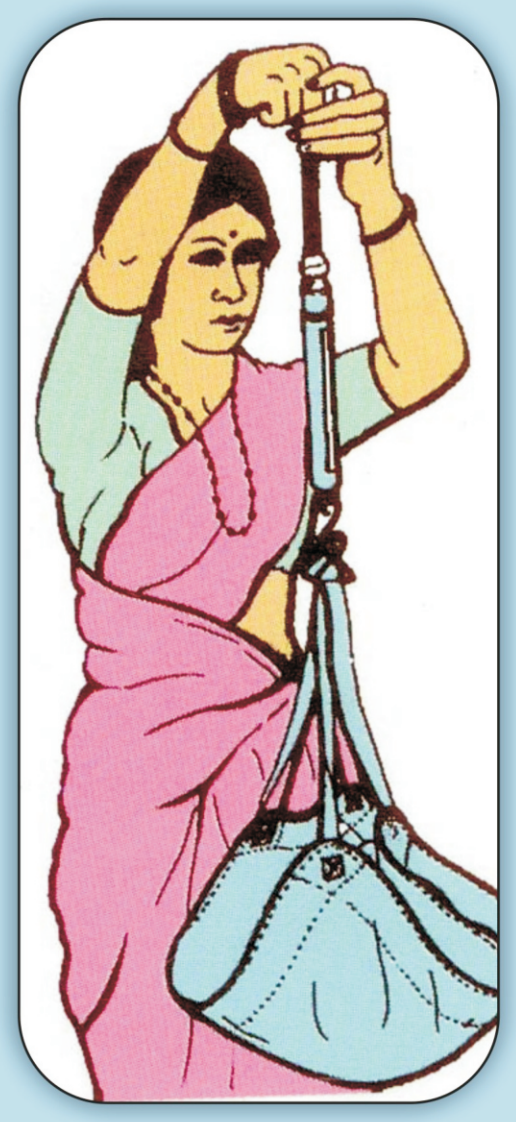

राज्य स्वास्थ्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़

बिजली ऑफिस चौक, कालीबाड़ी रायपुर–492001

दूरभाष : 0771–2236175, 2236104